

Youngster



YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • JUNE 2017 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

दिखा अद्भूतपूर्व उत्साह, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगमय हुआ टेक्निया



नई दिल्ली: 21 जून 2017 रू भारत की पांच हजार वर्ष पुराने हमारे महान ऋषियों की धरोहर योग को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अथक प्रयास से अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली और संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को योग दिवस के रूप में आयोजित करने का फैसला लिया, जिसका यह तीसरा साल है, इसी के तहत बुधवार को टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के शिक्षकों एवं स्टाफ ने योगाभ्यास किया और योग के साथ-साथ लोगों ने तनाव मुक्त जिंदगी जीने का भी गुर सीखा टेक्निया के सभागार में शिक्षकों एवं स्टाफ को संबोधित करते हुए श्री राम कैलाश गुप्ता (चेयरमैन, टेक्निया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स) ने कहा की योग इस महान देश का एक प्राचीन ज्ञान है जो सदियों के प्रयोगों के माध्यम से समृद्ध हुआ है, जिसे आज एक स्वस्थ तन और मन के निर्माण की

दिशा में बेहतरीन तकनीक के रूप में स्वीकार किया गया है। उन्होंने योग के महत्व पर बल देते हुआ कहा की भगवान श्री षण ने गीता में कहा है, "योग स्वयं की स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुँचने की यात्रा है। योग, भारतीय ज्ञान की पांच हजार वर्ष पुरानी शैली है। योग सिर्फ व्यायाम और आसन नहीं है बल्कि इससे मनुष्य को दीर्घ जीवन मिलता है।

डॉ अजय कुमार (निदेशक, टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) ने हमारे दैनिक जीवन में योग के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने योग को हमारे जीवन के एक अभिन्न अंग के रूप में शामिल करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया ताकि एक स्वस्थ और समृद्ध जीवन के साथ-साथ एक मजबूत राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

श्री एम एन झा (एम आर सिस्टम, टेक्निया इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज) कहा

है कि 'योग धर्म, आस्था और अंधविश्वास से परे एक सीधा प्रायोगिक विज्ञान है। योग जीवन जीने की कला है और एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। इन दिनों भारत के साथ ही सम्पूर्ण विश्व के लोगों में योग को लेकर जिज्ञासा बढ़ी है और शिवश्व योग दिवस का उद्देश्य ही समस्त विश्व में योग से होने वाले लाभों के प्रति लोगों को जागरूक करना है। आज के प्रदूषित वातावरण में योग का महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है। इस मौके पर संस्थान के सभी शिक्षकगण एवं स्टाफ मौजूद रहे।

—बालकृष्ण मिश्र

World Environment Day 2017

Man is both creature and moulder of his environment, which gives him physical sustenance and affords him the opportunity for intellectual, moral, social and spiritual growth. In the long and tortuous evolution of the human race on this planet a stage has been reached when, through the rapid acceleration of science and technology, man has acquired the power to transform his environment in countless ways and on an unprecedented scale.

World environment day 2017 will be celebrated by the people all across the world on 5th of June, at Monday. The United Nations, aware that the protection and improvement of the human environment is a major issue, which affects the well-being of peoples and economic development throughout the world, designated 5 June as the World Environment Day. The celebration of this day provides us with an opportunity to broaden the basis for an enlightened opinion and responsible conduct by individuals, enterprises and communities in preserving and enhancing the environment. Since it began in 1974, it has grown to become a global platform for public outreach that is widely celebrated all over the world.

"Connecting People to Nature"

Each World Environment Day is organized around a theme that focuses attention on a particularly pressing environmental concern. The theme for 2017, 'Connecting People to Nature', urges us to get outdoors and into nature, to appreciate its beauty and to think about how we are part of nature and how intimately we depend on it. It challenges us to find fun and exciting ways to experience and cherish this vital relationship.

Billions of rural people around the world spend every working day 'connected to nature' and appreciate full well their dependence on natural water supplies and how nature provides their livelihoods in the form of fertile soil. They are among the first to suffer when ecosystems are threatened, whether by pollution, climate change or over-exploitation.

Nature's gifts are often hard to value in monetary terms. Like clean air, they are often taken for granted, at least until they become scarce. However, economists are developing ways to measure the multi-trillion-dollar worth of many so-called 'ecosystem services', from insects



pollinating fruit trees to the leisure, health and spiritual benefits of a hike up a valley

WORLD ENVIRONMENT DAY HISTORY

World Environment Day (also called as WED) has been started celebrating as an annual event on every 5th of June since 1973 in order to raise the global awareness about the importance of the healthy and green environment in the human lives, to solve the environmental issues by implementing some positive



Planting

environmental actions as well as to make aware common public worldwide that everyone is responsible for saving his environment and not only somebody, government or organizations working for it. World environment day was first established to be celebrated every year by running some effective campaigns by the United Nations General Assembly and United Nations Environment Programme (UNEP) in the conference on Human Environment began from 5th to 16th of June at United Nations in 1972. It was first time celebrated in 1973 with the particular theme "Only one Earth". Since 1974, the celebration campaign of the world environment day is hosted in different cities of the world.

It is a big annual celebration started by the United Nations General Assembly to engage millions of people from different

countries across the globe as well as draw attention of political and health organizations to implement some effective actions.

WHY WORLD ENVIRONMENT DAY IS CELEBRATED

World environment day annual celebration campaign was started to address the huge environmental issues like wastage and losses of food, deforestation, increasing global warming and so many. Every year celebration is planned according to the particular theme and slogan of the year to bring effectiveness in the campaign all through the world.

It is celebrated to successfully get carbon neutrality, focusing on the forest management, reducing greenhouse effects, promoting bio-fuels production by planting on degraded lands, use of hydro-power to enhance electricity production, encourage common public to use solar water heaters, energy production through solar sources, developing new drainage systems, promoting coral reefs and mangroves restoration in order to get prevented from flooding and erosion including other ways of environmental preservation. Some of the objectives of the world environment day campaign are mentioned below:

✍ It is celebrated to make aware the common public about the environmental issues.

✍ Encourage common people from different society and communities to actively participate in the celebration as well as become an active agent in developing environmental safety measures.

✍ Let them know that community people are very essential to inhibit negative changes towards the environmental issues.

✍ Encourage people to make their nearby surroundings safe and clean to enjoy safer, cleaner and more prosperous future.

Palak Gupta BJMC



विश्व रक्त दाता दिवस

विश्व रक्तदाता दिवस प्रत्येक वर्ष 14 जून को सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाता है। वर्ष 2004 में स्थापित यह दिवस समाज में रक्तदान के बढ़ते महत्त्व के प्रति जागृति एवं सजगता पैदा करने के अभिप्राय से मनाया जाता है। प्रत्येक रक्तदान जीवन का उपहार है। रक्तदान कर किसी व्यक्ति को जीवन का उपहार दिया जा सकता है।

स्वैच्छिक रक्तदान से प्राप्त रक्त ही सबसे सुरक्षित होता है। गर्भवती माताओं एवं अन्य गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों हीमोफीलिया थैलीसीमिया जैसे रोग से ग्रसित बच्चों को रक्तदान के माध्यम से नवजीवन दिया जा सकता है। जन-मानस में अभी भी रक्तदान को लेकर कई भ्रांतियां व्याप्त हैं जबकि विशेषज्ञों की राय में 18 वर्ष से 65 वर्ष तक का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति जिसका वजन 45 किलोग्राम से अधिक हो, तीन माह के अन्तराल पर रक्तदान कर सकता है।

विश्व रक्तदाता दिवस के दिन विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा अनेक आयोजन एवं गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं तथा सरकारी सोसाइटी एवं सामाजिक संगठनों द्वारा नियमित रूप से स्वैच्छिक रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं को सम्मान दिया जाता है।

14 जून को पूरे विश्व के बहुत सारे देशों में लोगों के द्वारा हर वर्ष विश्व रक्त दाता दिवस मनाया जाता है। इसे हर वर्ष 14 जून को 1868 में पैदा हुए कार्ल लैंडस्टेनर के जन्मदिन पर मनाया जाता है। स्वस्थ व्यक्ति के द्वारा स्वेच्छा से और बिना पैसे के सुरक्षित रक्त दाता (इसके उत्पाद सहित) की जरूरत के बारे में लोगों की जागरूकता बढ़ाने के लक्ष्य से वर्ष 2004 में पहली बार इस कार्यक्रम को मनाने की शुरुआत की गयी थी। रक्त दाता इस दिन एक मुख्य भूमिका में होता है क्योंकि वो जरूरतमंद व्यक्ति को जीवन बचाने वाला रक्त दान करते हैं।

वर्ष 2004 में "विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस संघ तथा रेड क्रिसेंट समाज" के द्वारा 14 जून को वार्षिक तौर पर मनाने के लिये पहली बार इसकी शुरुआत और स्थापना हुयी। पर्याप्त रक्त आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिये सुरक्षित और बिना भुगतान वाले रक्त दाता, स्वेच्छा से रक्त-दान देने वाले को बढ़ावा देने, अपने बहुमूल्य कदम के लिये रक्त-दान करने वाले को धन्यवाद कहने के लिये पूरे विश्व के सभी देशों को प्रोत्साहित करने के लिये 58वें विश्व



स्वास्थ्य सम्मेलन में 2005 में मई महीने में इसके 192 सदस्य राज्यों के साथ डबल्यूएचओ के द्वारा विश्व रक्त दाता दिवस की आधिकारिक रूप से स्थापना की गयी थी।

ईश्वर का रूप हैं पिता वैसे तो हमारी भारतीय संसति में माता-पिता का स्थान पहले ही सर्वोच्च रहा है, किन्तु आजकल वैश्वीकरण के प्रभाव में हम विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय दिवसों को भी खुशी-खुशी सेलिब्रेट करते हैं। वैसे भी हमारी संसति हर तरह के सद्दिचारों और मूल्यों का स्वागत करती रही है और इस लिहाज से प्रत्येक वर्ष जून के तीसरे रविवार को इंटरनेशनल फादर्स डे का दिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। आखिर, हर कोई किसी न किसी की संतान तो होता ही है और इसलिए उसका फर्ज बनता है कि वह अपने पिता के प्रति अपने जीवित रहने तक सम्मान का भाव रखे, ताकि अगली पीढ़ियों में उत्तम संस्कार का प्रवाह संभव हो सके। अक्सर गलतियों पर टोकने, बाल बढ़ाने, दोस्तों के साथ घूमने और टी.वी. देखने के लिए डांटने वाले पिता की छवि शुरु में हम सबके बालमन में हिटलर की तरह रहती है। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हम समझते जाते हैं कि हमारे पिता के हमारे प्रति कठोर व्यवहार के पीछे उनका प्रेम ही रहता है। बचपन से एक पिता खुद को सख्त बनाकर हमें कठिनाइयों से लड़ना सिखाता है तो अपने बच्चों को खुशी देने के लिए वो अपनी खुशियों की परवाह तक नहीं करता। एक पिता जो कभी मां का प्यार देते हैं तो कभी शिक्षक बनकर

गलतियां बताते हैं तो कभी दोस्त बनकर कहते हैं कि मैं तुम्हारे साथ हूँ इसलिए मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि पिता वो कवच हैं जिनकी सुरक्षा में रहते हुए हम अपने जीवन को एक दिशा देने की सार्थक कोशिश करते हैं. कई बार तो हमें एहसास भी नहीं होता कि हमारी सुविधाओं के लिए हमारे पिता ने कहाँ से और कैसे व्यवस्था की होती है. यह तब समझ आता है, जब कोई बालक पहले किशोर और फिर पिता बनता है.

जाहिर है, अपने बच्चे के लिए तमाम कठिनाइयों के बाद भी पिता के चेहरे पर कभी शिकन नहीं आती. शायद इसीलिए कहते हैं कि पिता ईश्वर का रूप होते हैं, क्योंकि खुद सृष्टि के रचयिता के अलावा दुसरे किसी के भीतर ऐसे गुण भला कहाँ हो सकते हैं. हमें जीवन जीने की कला सिखाने और अपना सम्पूर्ण जीवन हमारे सुख के लिए न्योछावर कर देने वाले पिता के लिए वैसे तो बच्चों को हर समय तत्पर रहना चाहिए, लेकिन अगर इतना संभव न हो तो, कम से कम साल में एक खास दिन तो हो ही! उनके त्याग और परिश्रम को चुकाया नहीं जा सकता, लेकिन कम से कम हम इतना तो कर ही सकते हैं कि उनके प्रति शतज्ञ बने रहे. हालाँकि श्फादर्स डे मनाना हमारी संसति का हिस्सा नहीं रहा है और मूल रूप से यह यूएस में जून महीने के तीसरे रविवार को मनाया जाता है, लेकिन आधुनिक जमाने की संसति ने हमें फादर्स डे के रूप में अगर यह अवसर दिया है, तो हमें अच्छी चीजों और परम्पराओं का धन्यवाद कहना ही चाहिए! इससे हम अपनी भावनाएं जो चाहकर भी नहीं कह पाते, वह इस अवसर पर कह सकते हैं. उन्हें वो अपनापन महसूस करा सकते हैं जिससे वो अपने आपको बुढ़ापे में सुरक्षित महसूस कर सकें. उनको ये एहसास करा सकते हैं कि आज मैं जो भी हूँ वो आपके बिना संभव नहीं था. जाहिर है, हर मनुष्य के भीतर फीलिंग होती है और अगर किसी को उसकी संतान शुभकामनाएं दे तो उसे अच्छा ही लगेगा.

आप जितने भी सफल व्यक्तियों को देखेंगे, तो उनके जीवन की सफलता में उनके पिता का रोल आपको नजर आएगा. उन्होंने अपने पिता से प्रेरणा ली होती है और उनको आदर्श माना होता है. इसके पीछे सिर्फ यही कारण होता है कि कोई व्यक्ति लाख बुरा हो, लाख गन्दा हो,

घरेलू गंदे पानी से सिंचाई भी हो सकती है फायदेमंद

बढ़ती आबादी एवं शहरीकरण के कारण घरों से निकले गंदे पानी का निपटारा, जैव ईंधन के लिए वनों की कटाई और सिंचाई के पानी की कमी जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। भारतीय शोधकर्ताओं ने अब इन तीनों समस्याओं से निपटने के लिए एक तरीका खोज निकाला है, जो पर्यावरण के लिहाज से मुफीद होने के साथ आर्थिक रूप से भी फायदेमंद साबित हो सकता है।

उत्तराखंड के पंतनगर में स्थित जी.बी. पंत षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नोएडा के गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय और देहरादून स्थित भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक षि वानिकी में सिंचाई के लिए घरेलू दूषित जल के उपयोग से कम अवधि में तैयार होने वाली प्रजातियों के वृक्ष लगाने से एक साथ कई फायदे हो सकते हैं। इस पहल से एक ओर गंदे पानी के निपटारे में मदद मिल सकेगी, वहीं षि वानिकी में सिंचाई के लिए पानी की कमी और जैव ईंधन की कमी को भी दूर किया जा सकेगा।

घरेलू गंदे पानी या ग्रे-वाटर से अभिप्राय मलमूत्र रहित दूषित जल से है, जो आमतौर पर घरों अथवा कार्यालय की साफ-सफाई, बाथरूम, किचन, सिंक, शॉवर्स और कपड़ों की धुलाई से निकलता है। वैज्ञानिकों के अनुसार अपशिष्ट जल की अपेक्षा घरेलू दूषित जल में रोगजनक कम होते हैं। इस जल को उपचारित करना ज्यादा आसान होता है और टॉयलेट फ्लशिंग, फसलों की सिंचाई जैसे कामों में यह उपयोगी साबित हो सकता है।

इस अध्ययन के दौरान यूकेलिप्टस (यूकेलिप्टस हाइब्रिड), पॉपलर (पॉपलस डेल्टोइडस), नम्रा (व्हाइट विलो) और बकाइन (चाइनाबेरी ट्री) के वृक्ष एक प्लाट में नियंत्रित रूप से लगाए गए। इन वृक्षों की सिंचाई के लिए घरेलू दूषित जल उपयोग किया गया और उसकी तुलना सामान्य रूप से विकसित हुए पेड़ों से की गई। करंट साइंस जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन के मुताबिक घरेलू दूषित जल से सिंचित प्लाटों में लगाए गए पेड़ों का जैव द्रव्यमान (बायोमास) और उसकी आर्थिक उपयोगिता सामान्य से अधिक पाई गई। इसके आर्थिक मूल्यांकन से शोधकर्ताओं ने पाया कि ताजा पानी से सींचे गए प्लाट की अपेक्षा घरेलू दूषित जल से सिंचित प्लाट में रोपे गए वृक्षों से ज्यादा

लाभ हो सकता है।

अध्ययनकर्ताओं की टीम में आशा पांडेय, आर.के. श्रीवास्तव और राजेश कौशल शामिल थे। इन शोधकर्ताओं के मुताबिक सिंचाई के लिए घरेलू दूषित जल का उपयोग करने से यूकेलिप्टस में 143 प्रतिशत, पॉपलर में 54 प्रतिशत, नम्रा में 274 प्रतिशत और बकाइन के वृक्षों से 321 प्रतिशत अधिक बायोमास प्राप्त हुआ। ये वृक्ष तेजी से बढ़ते हैं और कम समय में विकसित हो जाते हैं। इनका उपयोग इमारती लकड़ी प्राप्त करने के लिए भी होता है। इस लिहाज से इन वृक्षों का आर्थिक महत्व काफी अधिक है।

यह अध्ययन जी.बी. पंत षि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में ऊसर भूमि में नियंत्रित रूप से किया गया, जहां कुछ हद तक अम्लीय एवं बलुई चिकनी मिट्टी थी। नवंबर, 2008 में शुरू हुए इस अध्ययन में विश्वविद्यालय की रिहायशी कॉलोनियों से निकले घरेलू दूषित जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया गया, जहां पर करीब 5000 लोगों की आबादी रहती है। शोधकर्ताओं के अनुसार वृक्षों की ये प्रजातियां स्थानीय जलवायु के मुताबिक बहुत तेजी से ढल गई थीं।

अध्ययन में शामिल इन चारों प्रजातियों के वृक्षों के बायोमास, ऊष्मीय मान और नाइट्रोजन की मात्रा के बीच सह-संबंध ज्ञात करने के लिए संख्यात्मक पद्धति का उपयोग किया गया। शोधकर्ताओं के अनुसार इन वृक्षों की लकड़ी के नमूनों में नाइट्रोजन का स्तर अधिक पाया गया और ऊष्मीय मान भी अधिक था। पांच साल की अवधि के लिए प्रति हेक्टेयर जमीन पर रोपे गए 2500 पौधे की दर से आर्थिक आकलन किया गया। पांच से सात साल तक चलने वाले इस परीक्षण में पेड़ों के शुरुआती नमूने दो साल के बाद लिए गए थे।

इस अध्ययन से जुड़े शोधकर्ताओं के मुताबिक घरेलू गंदे पानी के उपयोग से जैव ईंधन के उत्पादन का यह मॉडल आर्थिक एवं पर्यावरण के लिहाज से काफी उपयोगी साबित हो सकता है। सामान्यतरु इन वृक्षों का औसत बाजार मूल्य 2500 रुपये होता है। लेकिन घरेलू दूषित जल से सींचे गए वृक्षों का जैव द्रव्यमान अधिक होने के कारण इनका औसत मूल्य करीब 3000 रुपये तक था। अध्ययनकर्ताओं के मुताबिक इस अध्ययन के लिए साइट तैयार करने, वृक्षों की रोपाई और रखरखाव में 8.5 लाख से 9 लाख रुपये खर्च हुए। दोनों प्लाटों की

Contd. from Pg-3

लेकिन अपनी संतान को वह अच्छी बातें और संस्कार ही देने का प्रयत्न करता है। ऐसे कई उदाहरण हैं कि कोई व्यक्ति नालायक होता है, शराबी होता है, जुआरी होता है लेकिन ज्योंही वह पिता बनता है, अपनी गन्दी आदतें इसलिए छोड़ देता है ताकि उसके बच्चों पर बुरा असर न पड़े। हालांकि, यह संसार बहुत बड़ा है और इसमें लोग भी भिन्न प्रकार के हैं। पर यह कहा जा सकता है कि अपने बच्चे के लिए हर पिता बेहतर कोशिश करता है, अपनी क्षमता से कहीं ज्यादा! इसलिए वह तारीफ के काबिल तो होता ही है। अपने पिता से अफसोस और शिकायतें तो सिर्फ वो लोग करते हैं जिन्होंने जिंदगी में अपने आप को साबित नहीं किया वरना हर पिता का जीवन सीखने योग्य होता है। पिता ही दुनिया का एक मात्र शख्स है, जो चाहते हैं कि उसका बच्चा उससे भी ज्यादा तरक्की करे, उससे भी ज्यादा नाम कमाये, इसके लिए वह कई बार सख्त रूख भी अख्तियार करते हैं, क्योंकि जीवन में आगे बढ़ने के लिए अनुशासन का सहारा लेना ही पड़ता है। हालांकि, बदलते जमाने के साथ पिता का स्वरूप भी बदला है और हमेशा गम्भीर और कठोर दिखने वाले पिता की जगह अब अपने बच्चों के संग खेलने और मस्ती करने वाले पिता ने ले लिया है। समय के साथ बदलाव तो स्वाभाविक हैं, लेकिन पिता के कर्तव्य में कोई बदलाव नहीं आएगा और यही हमारी संसृति रही है। बदलते जमाने और रोजगार की जरूरतों की वजह से आज हम में से कई अपने माता-पिता से दूर हो गए हैं, ऐसे में हम उन बुजुर्ग कदमों को चाह कर भी सहारा नहीं दे पा रहे हैं, उनका अकेलापन नहीं दूर कर पा रहे हैं, तो मन में बस एक टीस भर जाती है अपनों के लिए, जो बेहद बेचौन करती है। ऐसे में हमें विभिन्न अवसरों, त्यौहारों पर उन्हें समय अवश्य ही देना चाहिए, बेशक वह अवसर फादर्स डे ही क्यों न हो! हालांकि, आज संयुक्त परिवारों के बिखण्डन से बुजुर्ग माँ-बाप की समस्याएं कहीं ज्यादा विकराल हो गयी हैं। श्बागवानश जैसी फिल्में हम देख ही चुके हैं और यह समाज की सच्चाई सी बन गयी है, जहाँ बच्चे बस अपने माँ-बाप की संपत्ति से मतलब रखते हैं, लेकिन उनके प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अनदेखा कर देते हैं। जाहिर है, संस्कार कहीं न कहीं बिगड़े हैं और इसे सुधारने का प्रयत्न करना ही फादर्स डे की सार्थकता कही जाएगी, अन्यथा फिर यह अन्य पश्चिमी औपचारिकताओं की तरह औपचारिकता बन कर रह जायेगा।

-शैम्या

महाशिवरात्रि और शिवतेरस पर्व से जुड़ी रोचक कथा

भारत पर्व एवं उत्सवों का देश है। भारतीय जीवन में गांवों से लेकर शहरों तक व्रतों एवं उत्सवों का स्थायी प्रभाव है। महाशिवरात्रि का पर्व भी सम्पूर्ण भारत के साथ साथ नेपाल व मारिशस आदि देशों में उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन मास के षण्ण पक्ष की त्रयोदशी को किया जाता है। यह शिव भक्तों का उत्सव है। इसे 'शशिवतेरस' भी कहते हैं। शिवरात्रि के प्रसंग को हमारे वेद-पुराणों में बताया गया है कि इनको महादेव या शिवयोगी कहते हैं क्योंकि जब समुद्र मन्थन हो रहा था उस समय समुद्र में चौदह रत्न प्राप्त हुए। उन रत्नों में हलाहल भी था। जिसकी गर्मी से सभी देव दानव त्रस्त होने लगे कोई भी उसे पीने को तैयार नहीं हुआ। अन्त में शिवजी ने हलाहल को निषपान किया। उन्होंने लोक कल्याण की भावना से अपने को उत्सर्ग कर दिया। इसलिए उनको महादेव कहा जाता है। जब हलाहल को उन्होंने अपने कंठ के पास रख लिया तो उसकी गर्मी से कंठ नीला हो गया। तभी से उन्हें "नीलकंठ" भी कहते हैं। शिव का अर्थ कल्याण होता है। जब संसार में पापियों की संख्या बढ़ जाती है तो शिव उन्हें मारकर लोगों की रक्षा करते हैं। इसीलिए उन्हें शिव कहा जाता है। हमारे देश में भगवान शिव के चौदह ज्योतिर्लिंग



माने जाते हैं। हमारे देश में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुषों द्वारा शिव रात्रि के दिन व्रत रखा जाता है, ताकि इस लोक में उनकी मनोकामनायें पूर्ण हों

अनजाने में ही शिवरात्रि का व्रत कर ही चुका था, साथ ही शिवलिंग पर बेल-पत्र भी अपने आप चढ़ते गये।

एक पहर रात्रि बीतने पर एक गर्भवती हिरणी पानी पीने आई। व्याध ने तीर को धनुष पर चढ़ाया किन्तु उसकी कातर वाणी सुनकर उसे इस शर्त पर जाने दिया कि प्रत्युष होने पर वह स्वयं आयेगी। दूसरे पहर में दूसरी हिरणी आई। उसे भी छोड़ दिया। तीसरे पहर भी एक हिरणी आई उसे भी उसने छोड़ दिया और सभी ने यही कहा कि प्रत्युष होने पर मैं आपके पास आऊंगी। चौथे पहर एक हिरण आया। उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई कि वे तीनों हिरणियां मेरी स्त्री थीं। वे सभी मुझसे मिलने को छटपटा रही थीं। इस पर उसको भी छोड़ दिया तथा

तथा शीघ्र ही शिवधाम को पहुंचें। इस व्रत में प्रातरुकाल स्नानादि के बाद पूरे दिन व्रत रखा जाता है तथा गंगाजल और दुग्धाहार ही गृहण करते हैं। मन्दिरों में जाकर शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं तथा रात्रि भर जागरण करते हैं। व्रत वाले दिन रुद्राष्टाध्यायी, शिवपुराण, शिवमहिम्नसोत्र, रुद्राभिषेक आदि का पाठ करना चाहिये।

पुराणों में कहा जाता है कि एक समय पार्वती शिवजी के साथ कैलाश पर बैठी थीं। उसी समय पार्वती जी ने प्रश्न किया— "इस तरह का कोई व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके धाम को प्राप्त कर सके?" तब उन्होंने यह कथा सुनाई थी।

प्रत्यना नामक देश में एक व्याध रहता था जो जीवों को मारकर या जीवित बेचकर अपना भरण पोषण करता था। वह किसी सेठ का रुपया रखे हुए था। उचित तिथि पर कर्ज न उतार सकने के कारण सेठ ने उसको शिवमठ में बन्द कर दिया। संयोग से उस दिन फाल्गुन बदी त्रयोदशी थी। अतरु वहां रातभर कथा, पूजा वार्ता होती रही। दूसरे दिन भी उसने कथा सुनी। चतुर्दशी को उसे इस शर्त पर छोड़ा गया कि दूसरे दिन वह कर्ज पूरा कर देगा। उसने सोचा रात को नदी के किनारे बैठना चाहिये। वहां जरूर कोई न कोई जानवर पानी पीने आयेगा। अतरु उसने पास के बेल वृक्ष पर बैठने का स्थान बना लिया। उस बेल के नीचे शिवलिंग था। जब वह अपने छिपने का स्थान बना रहा था उस समय बेल के पत्तों को तोड़कर फेंकता जाता था जो शिवलिंग पर ही गिरते थे। वह दो दिन का भूखा था। इस तरह से वह

कुछ और भी बेल-पत्र नीचे गिराये। इससे उसका हृदय बिल्कुल पवित्र, निर्मल तथा कोमल हो गया। प्रातरु होने पर वह बेल-पत्र से नीचे उतरा। नीचे उतरने से और भी बेल पत्र शिवलिंग पर चढ़ गये। अतरु शिवजी ने प्रसन्न होकर उसके हृदय को इतना कोमल बना दिया कि अपने पुराने पापों को याद करके वह पछताने लगा और जानवरों का वध करने से उसे घृणा हो गई। सुबह वे सभी हिरणियां और हिरण आये। उनके सत्य वचन पालन करने को देखकर उसका हृदय दुग्ध सा धवल हो गया और अति कातर होकर फूट-फूट कर रोने लगा। यह सब देखकर शिव ने उन सबों को विमान से अपने लोक में बुला लिया और इस तरह से उन सबों को मोक्ष की प्राप्ति हो गई।

अतरु जो लोग महाशिवरात्रि का व्रत निर्मल चित्त से करते हैं वे बहुत ही शीघ्र शिवधाम पहुंच जाते हैं और उन्हें मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इस लोक में उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है और परलोक में उन्हें शंकर भगवान के चरणों में स्थान प्राप्त हो जाता है।

-क२७णा

जिसने अपने को वश में
कर लिया है, उसकी जीत
को देवता भी हार में नहीं
बदल सकते।
~गौतम बुद्ध

Contd from Pg-4

तैयारी, रोपाई और रखरखाव में लागत बराबर थी, पर दूषित जल से सींचे गए वृक्षों का बायोमास अधिक होने के कारण उनकी कीमत अधिक प्राप्त हुई। अध्ययनकर्ताओं ने ताजे पानी से सींचे गए प्लाट से पांच साल में करीब 54 लाख रुपये और घरेलू दूषित जल से सींचे गए प्लाट से 68 लाख रुपये लाभ मिलने का अनुमान लगाया है, जो सामान्य से 14 लाख रुपये अधिक है। अध्ययनकर्ताओं के मुताबिक फिलहाल ये शुरुआती नतीजे हैं और इस पर अभी अधिक अध्ययन करने की जरूरत है। शोधकर्ताओं के अनुसार इस तरह की परियोजनाओं से भारत ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर बन सकता है और ऐसी पहल जलवायु परिवर्तन से लड़ने में भी मददगार हो सकती है।

उमाशंकर मिश्रा (इंडिया साइंस वायर)

कुपोषण के बढ़ते मामले भारत के लिए शर्मिंदगी का सबब

भारत में कुपोषण कहर बरपा रहा है और पूरी दुनिया में भारी शर्मिन्दगी की वजह बन रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार भारत में कुपोषण के कारण 5 साल से कम उम्र के लगभग 10 लाख बच्चों की मौत हो जाती है। कुपोषण के मामले में दक्षिण एशिया में भारत की स्थिति अन्य सब देशों से बुरी है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार भारत में कुपोषण की स्थिति बेहद चिंताजनक है। स्थिति की गम्भीरता का सहज अनुमान इन तथ्यों से लगाया जा सकता है कि कुपोषण के मामले में भारत ब्राजील से 27 फीसदी, चीन से 26 फीसदी और दक्षिण अफ्रीका से 21 फीसदी पीछे है। यहां तक की बांग्लादेश की स्थिति भी भारत से कहीं अधिक बेहतर है। संयुक्त राष्ट्र बालकोष (यूनीसेफ) द्वारा बच्चों के लिए कराए गए रैपिड सर्वे ऑफ चिल्ड्रेन 2013-14 के अनुसार भारत में 29.5 फीसदी बच्चे ऐसे हैं जिनकी उम्र 5 साल से कम है और जिनका वजन सामान्य से काफी कम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन बच्चों के कुपोषण की स्थिति को तीन मुख्य मानकों पर आंकता है, जिसमें अविकसित, कमजोर या शक्तिहीन और सामान्य से कम वजन शामिल हैं। नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे की तीसरी रिपोर्ट के अनुसार 40 प्रतिशत बच्चे ग्रोथ की समस्या के शिकार हैं और 60 प्रतिशत बच्चों का कम वजन है। 5 साल से कम आयु के लगभग 20 प्रतिशत बच्चों की मौत की मुख्य वजह कुपोषण है। देश की राजधानी दिल्ली के स्लम इलाकों में 36 प्रतिशत बच्चे कुपोषण से पीड़ित हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2015 के प्रस्तुत मसौदे में कुपोषण के कारण मृत्यु दर के असंतुलन पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति बेहद गहरी चिंता जताई गई है। आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में 1000 प्रसव के दौरान लगभग 60 नवजात शिशुओं की और 40 माताओं की मौत हो जाती है। बेहद विडम्बना का विषय है कि प्रतिवर्ष लगभग एक लाख महिलाएं एनीमिया की वजह से यानि खून की कमी से जीवन की जंग हार रही हैं और मौत के मुंह में समा रही हैं और 83 प्रतिशत महिलाएं खून की कमी से गम्भीर बीमारियों की शिकार हैं। इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा जारी ग्लोबल न्यूट्रिशन रिपोर्ट-2016 के अनुसार 48.1 फीसदी भारतीय महिलाएं एनीमिया यानी खून की कमी का शिकार हैं। यदि खानपान और रहन-सहन के मामलों में सतर्कता से काम लिया जाए तो कुपोषण पर काफी हद तक काबू पाया जा

सकता है। गौर करने लायक बात यह है कि केवल पेट भरना ही पोषण नहीं है। हमारे भोजन में समुचित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, खनिज लवण, विटामिन व जल आदि शामिल होना बहुत जरूरी है। हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि प्रोटीन हमारे शरीर के लिए सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण तत्व है। प्रोटीन में मुख्यतः कार्बन, ऑक्सीजन, हाइड्रोजन तथा नाइट्रोजन के यौगिक होते हैं। इसमें लोहा, तांबा, फास्फोरस, मैग्नीज व आयोडीन आदि सब प्रकार की मात्रा पाई जाती है। कार्बोहाइड्रेट्स कार्बन, हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन से बनते हैं। यह चावल, आटा, आलू, साबूदाना, मैदा, अनाजों व दालों में और भिण्डी व अरबी आदि रेशेदार सब्जियों में भरपूर मात्रा में पाया जाता है। वसा का निर्माण कार्बन, हाइड्रोजन व ऑक्सीजन के मिलने पर होता है। हमें वसा दूध, मक्खन, पनीर, दही, अण्डे, चर्बी व मछली, सरसों, नारियल, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल आदि के तेल से प्राप्त होती है। खनिज लवण हमारे शरीर के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। खनिज लवण शरीर में होने वाली रासायनिक क्रियाओं को चलाते हैं। विभिन्न रसों का निर्माण करते हैं, खून बनाते हैं, हड्डियों व दांतों को मजबूत करते हैं और हमें शक्तिशाली बनाते हैं। खनिज लवण कई प्रकार के होते हैं। खनिज लवणों में लोहा, कैल्शियम, नमक, पोटेशियम, मैग्नीशियम, तांबा, गन्धक, आयोडीन और फास्फोरस आदि शामिल हैं। लोहे की कमी से शरीर में 'रक्तहीनता' का रोग हो जाता है। लोहे की कमी को पूरा करने के लिए हमें पालक, मेथी, सलाद, पोदीना, टमाटर, अंगूर, अंजीर, दाल, अण्डे की जर्दी आदि का प्रयोग करना चाहिए। कैल्शियम की कमी से बच्चों को 'रिकेट्स' और महिलाओं को 'मृदुलास्थि' रोग हो जाता है। इससे बचने के लिए हमें दूध, अरहर की दाल, मूँग की दाल, मट्ठे आदि का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इनमें कैल्शियम भरपूर मात्रा में होता है। नमक हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है। पालक, शलगम, फूलगोभी आदि में नमक की उचित मात्रा पाई जाती है। पोटेशियम हृदय संबंधी रोगों को दूर करता है। इसलिए हमें खूब मात्रा में सब्जियों का प्रयोग करना चाहिए। लगभग सभी सब्जियों में पोटेशियम की मात्रा विद्यमान होती है। फास्फोरस शरीर की उचित वृद्धि करता है और हड्डियों व दांतों को मजबूत करता है। इसके लिए हमें दूध,

दही, पनीर, सेब, बादाम, मेवा, पालक, आलू, गोभी, मूली, भुट्टा, अण्डा, मछली, मांस आदि का रूचिनुसार प्रयोग करना चाहिए।

हमारे शरीर को विटामिनों की भी बहुत जरूरत होती है, क्योंकि विटामिन हमारे शरीर का समुचित विकास करते हैं। विटामिन 'ए' गाजर, पालक, गोभी, लहसून, पपीता, आम, केला, सलाद, टमाटर, दूध, घी, मक्खन, मांस, मछली आदि में मिलता है। विटामिन 'बी' बारह प्रकार का होता है। यह सभी छिलके वाले अनाजों, दालों, सब्जियों, खमीर, दूध व दूध से बने पदार्थों, मांस, मछली व अण्डे की जर्दी आदि में होता है।

विटामिन 'सी' सन्तरा, मौसमी, नारंगी, अन्नानास आदि सभी खट्टे फलों, इमली व प्याज आदि में भरपूर मात्रा में मौजूद होता है। विटामिन 'डी' दूध, मक्खन, मछली के तेल व अण्डे की जर्दी आदि में तो मिलता ही है, साथ ही यह सूर्य की किरणों में भी मौजूद होता है। विटामिन 'के' दूध, हरे पत्ते वाली सब्जियों, टमाटर, अण्डे की जर्दी, पनीर, कलेजी में जाया जाता है। इसकी कमी होने से शरीर से बहता हुआ खून नहीं रुकता है। जल हमारे शरीर के लिए अति आवश्यक है। हमारे शरीर में जल की मात्रा 70 प्रतिशत होती है। इसकी कमी होने से शरीर बेहद कमजोर हो जाता है और अनेक बीमारियाँ आने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए, हमें बिल्कुल साफ पानी पीना चाहिए और हो सके तो पानी उबालकर ठण्डा करने के बाद प्रयोग करना चाहिए।

हमें यह भी कदापि नहीं भूलना चाहिए कि कुपोषण से मुक्ति पाने में स्वच्छता एवं जागरूकता बेहद अहम भूमिका निभाती है। इन दिनों देश भर में 'एक कदम स्वच्छता की ओर' नारे के साथ घर-घर में शौचालय निर्माण का अभियान जोरशोर से चल रहा है।

इसके लिए जन-जन की जागरूकता एवं सक्रिय भागीदारी बेहद आवश्यक है। सरकार की तरफ से बच्चों के विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण और गर्भवती महिलाओं के लिए कई प्रकार की स्वास्थ्य योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं, जिनका लाभ उठाकर कुपोषण की संभावनाओं को समाप्त किया जा सकता है। नवजात शिशु को प्रथम छह माह तक केवल माँ का दूध दिया जाना चाहिए और छह माह के बाद बच्चे को पूरक पोषाहार देना शुरू करना चाहिए। बच्चे को दो वर्ष तक स्तनपान करवाना बहुत जरूरी है।

Contnd. from Pg 6

कुपोषण के लक्षणों का ज्ञान होना अति अनिवार्य है। कुपोषण से बच्चे में थकान, रूखी त्वचा, रूखे बाल, मसूड़ों में सूजन, मसूड़ों से रक्तस्राव, दांतों में सड़न, कम वजन, कम बढ़ोतरी, विचलित मन, मांस-पेशियों में दर्द, पेट का फूलना, चिड़चिड़पन, सीखने में असमर्थ आदि सामान्य लक्षण देखने को मिलते हैं। अति कुपोषित बच्चे में जोड़ों में दर्द, कमजोर मांस पेशियां, नाखून टूटना, बाल झड़ना या रंग बदलना, भूख न लगना, दुबलापन, पतलापन, पेट का फूलना आदि लक्षण देखने को मिलते हैं। कुपोषित बच्चे को अंधविश्वास में पड़कर झाड़-फूंक करने वाले बाबाओं के पास ले जाने के कारण निकट के अस्पताल में ले जाना चाहिए और पूरा इलाज करवाना चाहिए। कहने की बात नहीं कि कुपोषण के मामलों में गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा आदि अहम भूमिका निभाती है। गरीबी की मार के चलते बच्चों और माताओं को समुचित मात्रा में पौष्टिक भोजन नहीं मिल पाता, जिससे उनके शहरी में ऊर्जा, वसा, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट्स जैसे आवश्यक तत्वों की भारी कमी हो जाती है। इसी वजह से देश की 75 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं एनीमिया रोग (खून की कमी) का शिकार हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 63 फीसदी बच्चों को भरपेट खाना नहीं मिल पाता है और कई बार उन्हें भूखे पेट ही सोना पड़ता है। इसका बच्चों पर भारी कुप्रभाव पड़ रहा है।

इसलिए, देश-प्रदेश की सरकारों द्वारा कुपोषण के खिलाफ कारगर कदम उठाने की सख्त आवश्यकता है। कुपोषण का कारण बनने वाली परिस्थितियों गरीबी, भूखमरी, स्वास्थ्य आदि हर स्तर पर व्यापक एवं ठोस नीतियां धरातल पर उतारना बेहद जरूरी है। इसके लिए गरीबों की पूरी गम्भीरता के साथ सुध लेनी होगी और गरीबी-उन्मूलन के लिए ईमानदार प्रयास करने होंगे।

कुल मिलाकर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सर्वेक्षणों, अध्ययनों और शोध रिपोर्टों के सनसनीखेज आंकड़े स्वतंत्रता के सात दशक पूरे करने जा रहे रहे विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत के लिए न केवल चिन्तनीय एवं चुनौतिपूर्ण हैं, बल्कि, बेहद शर्मनाक भी हैं। देश से भूखमरी व कुपोषण को मिटाने के लिए अचूक कारगर योजनाओं के निर्माण एवं उन्हें ईमानदारी से क्रियान्वित करने, सरकार की ढ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य व शिक्षा के स्तर को सुधारना बेहद जरूरी है।

-बालकृष्ण मिश्र

Roll of Women Employment and Entrepreneurship In current scenario:

It is a general belief that economic dependence of women is a major obstacle to their empowerment. Women's participation in the labor force is regarded as an index of their empowerment. It is believed that economic independence gives them personal autonomy and the power of decision making. Research has shown that a decline in the women's employment directly affects their growth, mortality, and status. From the point of this, the lower strata can be considered as empowered because most of them work as labor, not only in their private homes, but also as paid workers, maid servants, labor on daily wages, and women employed in salaried jobs both skilled and non-skilled. But there are many women's out of labor force due to their unskilled. In current scenario we look into various growth prospects financial empowerment of women and many major areas in which women's need growth. The difference of gender plays a major role in development areas including governance, gender biasness, the economy, sexual and reproductive rights, citizenship and social movements. Women's are important part of labour force but they are considered as underrepresented in the labour force. In recent years women have entered the paid workforce in greater numbers. The development sector is keen to support women into work because employment contributes to development goals and targets, by alleviating poverty and also because employment has the potential to empower women. Now these days we have seen that in every fields women's are entered and doing excellent work. But in the present time women's are not treated in equal parameter.

Antika Bhargava

THIS MONTH

June 9, 1898 - The British signed a 99-year lease for Hong Kong, located on the southeastern coast of China. Hong Kong, consisting of an area measuring 400 square miles, was administered as a British Crown Colony until July 1, 1997, when its sovereignty reverted to the People's Republic of China.

June 12, 1898 - The Philippines declared their independence from Spain. The islands were named after King Philip II. Once freed from Spain, the islands were then invaded and occupied by U.S. forces. They became an American colony and remained so until after World War II.

June 28, 1914 - Archduke Francis Ferdinand, Crown Prince of Austria and his wife were assassinated at Sarajevo, touching off a conflict between the Austro-Hungarian government and Serbia that escalated into World War I.

June 22, 1918 - A Michigan Central Railroad troop train struck the rear of the Hagenbeck-Wallace Circus train in Ivanhoe, Indiana. Fifty-three circus performers were killed. Of the circus animals not killed, most were maimed and had to be destroyed. The performers, of whom only three could be identified, were buried in a mass grave.

June 28, 1919 - The signing of the Treaty of Versailles formally ended World War I. According to the terms, Germany was assessed sole blame for the war, forced give up Alsace-Lorraine and overseas colonies, and pay reparations of \$15 Billion. The treaty also prohibited German rearmament.

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Technical Production Personnel: People who operate the production equipment. Also called below-the-line personnel.

Talent: Collective name for all performers and actors who appear regularly on television.

Facilities Request: A list that contains all technical facilities needed for a specific production.

Medium Requirements: All content elements, production elements, and people needed to generate the defined process message.

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

Production Schedule: The calendar that shows the pre production, production, and post production dates and who is doing what, when, and where.

Program Proposal: Written document that outlines the process message and the major aspects of a television presentation.

Compilation: Rahul Mittal

Dealing with competition: Acquisitions as a growth mantra adopted by Indian e-commerce industry

Acquisitions have become a popular business strategy for companies looking to gain a competitive edge, or acquire new technologies and skill sets. In the case of e-commerce, a competitive threat compels a defensive move to get bigger, faster. To become bigger firms have to acquire other firms in a bid to have a higher customer base, more facilities, and more funds and so on.

One of the companies in news is the largest e-commerce company in India, Flipkart. It acquired Myntra, which acquired Jabong and the strategy continues by acquiring payments services like PhonePe, Indian business of ebay and currently the bid to acquire snapdeal.

But beyond the numbers, why do acquisitions make headlines? Putting it simply, acquisitions help get capabilities which they do not possess. In India, e-commerce - the poster boy of the startup ecosystem - has seen unicorns being amply backed by acquisitions of startups in various sectors.

Mostly, acquisitions happen because of the acquired company's (lack of and) inability to raise more funds. Very often, rivals are acquired to weed out competition as well. (An exception in Indian e-commerce history to both of these statements might be Flipkart's acquisition of Myntra for over \$300 million in 2014.)

In China, the acquisition of world's most highly valued startup cab aggregator platform Uber- by Alibaba-backed DidiChuxing in August 2016 was a classic example of keeping your enemies closer. In fact, the development had a rippling effect in India - speculations were strong that Uber might now acquire its Indian rival Ola, thereby eliminating competition and establishing itself as the market leader in their biggest market in Asia. However, there has been no developments on that front, although there have been reports of Uber buying Meru Cabs earlier.

Myntra acquiring Jabong is another instance where the better-off company acquires its smaller rival. Once reported to have been in talks with Amazon for a buyout at a valuation of \$1.2 billion, Jabong had a tough two years with lack of capital and leadership changes. The Rocket Internet-backed fashion portal built itself back from the ruins this year, and closed deal with Snapdeal for acquisition, as its parent was keen to exit. Flipkart-Myntra-Jabong alliance now has an undeniable upper hand in online fashion in India, without building or acquiring a new technology or category per se.

The fact remains that acquisitions are intended to boost a company's sales and organic growth.

The past 12 months have seen amazing additions in e-commerce empowered by technology - be it in payments, logistics, or customer experience and this will continue as the war amongst these firms to become bigger and stronger is getting wilder and wilder particularly in case of Flipkart and Amazon.

Dr. SachinSabharwal

LIFE...

*Life is a struggling journey,
to reach our aims.*

*Where we face
many difficulties and pains.
Life has many facets,
Some bad,
some happy moments.*

*Life should not be wasted
In being sad and in complaining.
We should try to be pleased
and see good in others.
Don't expect anyone to be with you
the only person who can help you
IS YOU.*

*Forget the past
don't dwell on the future,
Live in the present and
enjoy every moment.
Life is a gift of god,
be thankful for it.*

*Life is to enjoy and to love!
Live for others and help others,
Not to hurt others.
So live happily,
Because we won't get another.*

Sumit Kumar

IMPORTANT QUOTES

"A doctor can bury his mistakes but an architect can only advise his clients to plant vines."

Frank Lloyd Wright

...

"A man can't be too careful in the choice of his enemies."

Oscar Wilde

...

"It is better to have a permanent income than to be fascinating."

Oscar Wilde

...

"Manuscript: something submitted in haste and returned at leisure."

Oliver Herford

...

"Too many pieces of music finish too long after the end."

Igor Stravinsky

...

"Anything that is too stupid to be spoken is sung."

Voltaire

...

Compilation: Devashish Tondon

WINNERS v/s LOSERS Part-69

When a Winner makes a mistake he says "I was wrong," when a Loser makes a mistake he says "It wasn't my fault."

...

A Winner learns from his mistakes. A Loser learns not to make mistakes by not trying anything different.

...

A Loser believes in Fate. A Winner believes that we make our fate by what we do or fail to do.

...

A Winner stops talking when he has made his point. A Loser goes on until he has blunted his point.

...

A Winner in the end gives more than he takes. A Loser dies clinging to the illusion that winning means taking more than you give.

...

The Winner is always part of the answer; the Loser is always part of the problem.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: hodbjmc@tecnia.in

Vol. 13 No. 6

RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5

Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.